टॉम डबलडे 60 साल से जंगलों में घूम रहे हैं, वे जाने माने बर्ड वॉचर हैं और जंगल में घूमते समय उनकी नज़र अधिकतर ऊपर की तरफ होती है, लेकिन कभी-कभी वो नीचे भी देख लेते हैं। इस बार जब उन्होंने नीचे देखा तो उनकी नज़र ऐसी चीज पर पड़ी जिसे लुप्त प्राय मान लिया गया था। वरमाँट के फिश एंड वाइल्डलाइफ डिपार्टमैंट के बॉटनिस्ट बॉब पॉप ने इस बारे में कहा, ''यह बिल्कुल ऐसे है जैसे कोई मर कर ज़िंदा हो गया हो। हमें तो यकीन था कि यह लुप्त हो गया है।'' असल में टॉम की नज़र एक ऐसे दुर्लभ ऑर्किड पर पड़ी, जो 1902 के बाद से दिखा नहीं था। तथापि, बॉब ने गत वर्ष इसे देखा था और टॉम ने इस वर्ष। अब यह पक्का हो गया कि, दुर्लभ ऑर्किड प्रजाति ''वॉर्ल्ड पोगोनिया'' की वापसी हो गई है। ये फूल बहुत आकर्षक या रंग बिरंगे नहीं होते लेकिन वनस्पति वैज्ञानिकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये छोटे फूल, वॉर्ल्ड (चक्करदार) पोगोनिया ''थ्रैटन्ड'' वर्ग में हैं। हालांकि फैडरल रिकॉर्ड में इन्हें अभी भी विलुप्त बताया जा रहा है, पर अब वरमाँट के वायनूस्की वैली पार्क डिस्ट्रिक्ट के वन में, जहां इंसानी दखल नहीं के बराबर है, इनकी वापसी हो गई है। बॉब पॉप ने कहा ''हम इन पर नज़र रखे हुए हैं, इन्हें घोंघों से खतरा है और हिरणों से भी, जो ऑर्किड के फूल खाते हैं।'' वायनूस्की वैली पार्क डिस्ट्रिक्ट असल में कई शहरों का एक को-ऑपरेटिव है जो विकास के लिए नहीं, बल्कि भूमि संरक्षण के फंड जुटाता है और जमीन का उपयोग प्राकृतिक वन क्षेत्र के विकास के लिए करता है। डबलडे कहते हैं, ''यह पौधा मैंने पहले कभी नहीं देखा था और मुझे तो जरा भी पता नहीं था कि यह ऑर्किड है।'' ज्ञातव्य है कि, अमेरिका में अब तक 1673 प्रजातियों को ''थ्रैटन्ड'' या ''एन्डेन्जर्ड'' वर्ग में रखा गया है, इनमें से 941 तो पौधे ही हैं। वर्ष 1902 में ऑर्किड को वरमाँट राज्य का संरक्षण प्राप्त था।

संसद भवन पर स्थापित 'सिंह' में बदलाव की आवश्यकता नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने माना कि '' सिंह चतुर्मुख'' स्थापित किए जाने में उसे आपत्तिजनक कुछ भी नहीं लगा

- **याचिका में दावा किया गया था कि हाल ही में नई दिल्ली में सैंट्रल विस्टा परियोजना के तहत निर्मित नए संसद भवन की छत पर स्थापित ''लायन कैपिटल'' में सिंह की अनुकृतियां खुले मुंह के साथ क्रूर और आक्रामक लगती हैं।**

नयी दिल्ली, 30 सितंबर। उच्चतम न्यायालय ने नवनिर्मित संसद भवन की छत पर स्थापित भारत का राजचिन्ह, ''सिंह चतुर्मुख'' (लायन कैपिटल) की अनुकृति के कथित भाव एवं दृश्य में परिवर्तन के खिलाफ दायर एक जनहित याचिका शुक्रवार की खारिज कर दी।

न्यायमूर्ति एम आर शाह और न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी की पीठ ने याचिका खारिज करते हुए कहा कि, नवनिर्मित संसद भवन की छत पर स्थापित भारत का राजचिह्न (अनुचित उपयोग का निषेध) अधिनियम-2005 के किसी भी प्रावधान का उल्लंघन नहीं करता है।

पीठ ने राजचिह्न के भाव एवं दृश्य परिवर्तन के संदर्भ में कहा, यह धारणा व्यक्ति के दिमाग पर निर्भर करती है। अधिवक्ता अल्दानिश रीन और रमेश कुमार मिश्रा की ओर से दायर याचिका में शीर्ष अदालत से गुहार लगाई गई थी कि, भारत के राजचिह्न को सुधारने के लिए केन्द्र सरकार को एक निर्देश जारी करे। याचिका में दावा किया गया था कि, हाल ही में नई दिल्ली में सैंट्रल विस्टा परियोजना के तहत निर्मित नए संसद भवन की छत पर स्थापित लायन कैपिटल में सिंह की अनुकृतियां खुले मुंह के साथ क्रूर और भी आक्रामक लगती हैं।

याचिका में कहा गया था कि, नए स्थापित राजचिह्न में 'सिंहों' के डिजाइन में एक स्पष्ट अंतर है। ये सारनाथ संग्रहालय में संरक्षित प्रतीक की तुलना में बदले हुए रूप में हैं। याचिका में कहा गया था कि, भारत का राजचिह्न केवल एक ग्राफिक डिजाइन नहीं है, बल्कि इसका सांस्कृतिक और दार्शनिक महत्व भी है। सिंह को अशोक के दार्शनिक और आध्यात्मिक अर्थ के कारण भारत के राजचिह्न के रूप में अपनाया गया था। इसे अनजाने और अवैध रूप से नहीं बदला जाना चाहिए था।

आर.सी.ए...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में अपील कर दी है। डिवीज़न बैंच दस अक्टूबर को अपील पर सुनवाई करेगी। सिंगल बैंच में हुई सुनवाई के दौरान आर.सी.ए. की ओर से कहा गया कि उन्हें याचिका पर विस्तृत जवाब पेश करना है। इसलिए उन्हें समय दिया जाए। इस पर अदालत ने आर.सी.ए. को जवाब के लिए 11 अक्टूबर तक का समय दिया तथा अन्य पक्षकारों को नोटिस जारी कर जवाब देने को कहा। गौरतलब है कि पूर्व आईएएस और प्रदेश के जिलों के पुनर्गठन के लिए बनी हाई पावर कमेटी के चेयरमैन रामलुभाया को आर.सी.ए. का मुख्य चुनाव अधिकारी बनाने पर याचिकाओं में चुनौती दी गई है। याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए सिंगल बैंच ने गत 29 सितंबर को आदेश जारी कर तीस सितंबर को होने वाले चुनाव पर रोक लगा दी थी।

एक ही परिवार से तीन जने पार्षद निर्वाचित

बैतूल,30 सितंबर। मध्यप्रदेश के बैतूल जिले की नगर परिषद चिचोली में एक ही परिवार से मां-बेटा और बहू चुनाव जीते हैं। आधिकारिक तौर पर आज घोषित हुए चुनाव में 15 वार्डों वाली नगर परिषद में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के 11 पार्षद, कांग्रेस के चार पार्षद चुनाव जीते। इसमें भाजपा उम्मीदवार सुलोचना मालवीय वार्ड नंबर 12 से, पुत्र आशुतोष उर्फ बाली मालवीय वार्ड नंबर 8 से एवं बहू वर्षा मालवीय ने वार्ड नंबर 11 से अपने निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस उम्मीदवारों को हरा दिया। नगर परिषद के गठन के बाद पहली बार हुए चुनाव में सुलोचना मालवीय अध्यक्ष निर्वाचित हुई थी।

खड़गे सहित तीन उम्मीदवारों ने नामांकन भरा

नयी दिल्ली, 30 सितंबर। कांग्रेस अध्यक्ष पद के चुनाव के लिए नामांकन पत्र भरने के आखिरी दिन राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे सहित तीन उम्मीदवारों ने अपने नामांकन पत्र दाखिल किए।

कांग्रेस चुनाव विभाग के प्रभारी महासचिव मधुसूदन मिस्त्री ने शुक्रवार को नामांकन पत्र दाखिल किये जाने के बाद यह जानकारी देते हुए बताया कि कांग्रेस अध्यक्ष के लिए खड़गे के अलावा शशि थरूर और झारखंड से के एन त्रिपाठी शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि नामांकन के लिए कुल 20 सैट दाखिल किये गये हैं जिनमें से खड़गे की तरफ से नामांकन पत्रों के 14 सैट जमा कराए गये हैं। थरूर की ओर से पांच सैट और के एन त्रिपाठी की ओर से एक पर्चा जमा कराया गया है। कांग्रेस चुनाव विभाग के प्रभारी ने कहा कि तीनों उम्मीदवारों में से कोई भी पार्टी का आधिकारिक उम्मीदवार नहीं है। उनका कहना था कि यदि कोई व्यक्ति दावा करता है कि उन्हें कांग्रेस अध्यक्ष का आशीर्वाद प्राप्त है तो उसका यह दावा गलत है।

एक बार फिर कांग्रेस की लाज दक्षिण भारत के हाथ में है

हिन्दी बैल्ट से लगभग निष्कासित होने के कारण, दक्षिण भारत से अच्छी संख्या में सांसद बनवाकर कांग्रेस पुनर्विजित होने की आशा रखती है

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 30 सितम्बर। एक बार फिर से एक दक्षिण भारतीय ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नेतृत्व कर रहा होगा। देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी अब एक ऐसे आक्रामक राजनीतिक विरोधी के सामने अपने अस्तित्व का संघर्ष कर रही है जिसने उसे हिन्दी भाषी राज्यों से करीब-करीब निर्वासित कर दिया है।

उत्तर भारत की तुलना में कांग्रेस की दक्षिण भारत में अब भी मजबूत स्थिति है तथा कर्नाटक और केरल में उसके सत्ता में आने की अच्छी संभावनाएं हैं। कर्नाटक में तो वह मुख्य विपक्षी दल है।

कांग्रेस का तमिलनाडू में अपने एक सशक्त क्षेत्रीय सहयोगी के साथ गठबंधन है। दक्षिण भारत में इस राज्य से सबसे अधिक संख्या से सांसद चुन कर लोकसभा आते हैं।

इस राजनीतिक वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए और यह तथ्य कि उत्तर भारत में कांग्रेस को बहुत कुछ कवर करना है, एक दक्षिण भारतीय द्वारा पार्टी का संचालन करना एक ठोस विचार प्रकट होता है, लेकिन ये प्रश्न भी उपस्थित होते हैं कि इस निर्णय से पार्टी को हिन्दी बैल्ट में नुकसान होगा।

लेकिन दक्षिण भारत में नये कांग्रेस अध्यक्ष, चाहे मल्लिकार्जुन खड़गे हों या शशि थरूर, का काम बहुत मुश्किल है क्योंकि क्षेत्रीय ताकतों ने तीन राज्यों तमिलनाडु तथा तेलुगू-भाषी तेलंगाना एवं आन्ध्र प्रदेश में पार्टी को सत्ता से दूर कर रखा है।

सबसे पहले काम तो यह, कि कांग्रेस अध्यक्ष को इस क्षेत्र में पार्टी को पुनर्जीवित करना होगा क्यों कि यहाँ उत्तर की तुलना में, कांग्रेस के लिये बेहतर अवसर हैं।

दक्षिण भारत से लोकसभा में 130 सांसद आते हैं तथा इस बार भाजपा की पूरा प्रयास कर रही है कि वह इस क्षेत्र ज्यादा से ज्यादा सीटें जीत सके। पिछले चुनाव में, भाजपा ने कर्नाटक में इकतरफा जीत हासिल करते हुये, कुल 28 सीटों में से 25 सीटें जीत ली थी।

लेकिन ऐसा लगता है कि कांग्रेस ने उस समय अपने पैरों में खुद ही कुल्हाड़ी मार ली थी, जब उसने आन्ध्र प्रदेश के दो हिस्से करके तेलंगाना राज्य बना दिया था। यह एक ऐसा निर्णय था, जो उसके लिये सोने के अंडे देने वाली मुर्गी को ही मारने के समान सिद्ध हुआ। 2004 तथा 2009 में आन्ध्र प्रदेश से लोकसभा में 30 से अधिक सांसद आये थे, जिससे यू.पी.ए. को आगे बढ़ने के लिये सहारा मिला था तथा उसकी सरकार बन सकी थी।

- **राहुल गांधी की ''भारत जोड़ो'' यात्रा से पैदा हुई जनभावना और कर्नाटक के पुराने दलित नेता खड़गे के अध्यक्ष बनने से कांग्रेस क्या यह आशा पूरी कर पायेगी?**
- **संयोगवश, यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष भी कर्नाटक के बी.वी. श्रीनिवास हैं।**
- **आंध्र प्रदेश का आंध्र व तेलंगाना में विभाजन कांग्रेस की एतिहासिक भूल साबित हुई। क्योंकि विभाजन के बाद दोनों राज्य में तेलंगाना व आंध्र में पार्टी का सफाया हो गया।**
- **अब तक दक्षिण भारत के चार अन्य नेता, कामराज, निजलिंगप्पा, संजीव रेड्डी व नरसिम्हा राव भी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं।**

लेकिन आन्ध्र के दो टुकड़े हो जाने के बाद, कांग्रेस को इन दोनों ही राज्यों में लोकसभा की एक भी सीट नहीं मिली तथा विधान सभा चुनावों में भी क्षेत्रीय राजनैतिक ताकतों ने इसका सफाया कर दिया तथा अब तो उनकी स्थिति और भी बेहतर हो गई हैं।

इस प्रकार नये कांग्रेस अध्यक्ष, जिसके लिये खड़गे की ही सम्भावना ज्यादा है, को दक्षिण भारत से ही कांग्रेस को मजबूत करना शुरू करना होगा तथा इस काम में राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा द्वारा हासिल की गई प्रतिष्ठा का लाभ भी नये अध्यक्ष को मिलेगा। कांग्रेस हाई कमान द्वारा समर्थित नये अध्यक्ष को इन जमीनी सच्चाइयों को पूरी तरह समझना होगा।

इसे एक संयोग की कहा जायेगा कि जिस दिन राहुल गांधी की यात्रा ने कर्नाटक में प्रवेश किया, उसी दिन इस राज्य के पुराने एवं प्रतिष्ठित नेता खड़गे ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिये अपना नामांकन पत्र दाखिल किया है।

स्वच्छ छवि वाले दलित नेता तथा गांधी परिवार के प्रति घोर वफादार खड़गे मोदी सरकार के मुखर विरोधी रहे हैं तथा केन्द्र की भाजपा सरकार को अपदस्थ करने के लिये विपक्ष की एकता की वकालत करते रहे हैं।

पार्टी के अध्यक्ष पद पर उनके पदोन्नयन से अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की संभावनाएं बेहतर बना सकता है। कांग्रेस के अच्छा प्रदर्शन करने की संभावनाएं है क्योंकि राज्य में भाजपा सरकार का खेल सरकार विरोधी लहर का सामना कर रही है बल्कि उस पर अब तक की सबसे भ्रष्ट सरकार होने का ढाचा भी लग गया है और इसलिए भी जनता नाराज है।

अगर खड़गे पार्टी अध्यक्ष बन जाते हैं तो दक्षिण भारत से एक और नेता होंगे जो देश की सबसे पुरानी पार्टी का नेतृत्व करेगा। इससे पहले कामराज, एस. निजलिंगप्पा, संजीवा रेड्डी और बी.पी.वी. नरसिम्हाराव पार्टी अध्यक्ष रह चुके हैं।

यह संयोग ही है कि इस समय युवक कांग्रेस का अध्यक्ष भी कर्नाटक से ही है-बी.वी.श्रीनिवास।

कानून के स्नातक खड़गे लगातार 9 बार कर्नाटक विधानसभा चुनाव जीत चुके हैं और 2009 व 2014 में कलबुर्गी से लोकसभा चुनाव भी जीते हैं। जून 2020 में राज्य सभा से चुनाव जीत चुके खड़गे इस सक राज्यसभा में विजय के नेता हैं।

बारामूला में आज शुक्रवार को दो आतंकी मारे गये

श्रीनगर 30 सितंबर। जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में शुक्रवार को सेना की भर्ती रैली पर हमला करने की योजना बना रहे जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) के दो आतंकवादियों को सुरक्षा बलों ने मार गिराया।

यह मुठभेड़ केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के केन्द्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर दौरे से पहले हुई है। बारामूला के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रईस मोहम्मद भट ने कहा कि येदिपोरा पट्टन में मुठभेड़ तब शुरू हुई जब सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना के बाद इलाके की घेराबंदी कर दी।

भट ने यहां संवाददाताओं से कहा, जैसे ही हम संदिग्ध स्थान के पास पहुंचे, छिपे हुए आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। जिसका सुरक्षा बलों ने माकूल जवाब दिया और मुठभेड़ शुरू हुई। जिसमें दो आतंकवादी मारे गए।

शरजील इमाम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

होगा। सुप्रिम कोर्ट के निर्णय के तहत राजद्रोह के मामले में कार्यवाही ठंडे बस्ते में हैं। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश अनुज अग्रवाल ने आई.पी.सी. की धारा 153 (दो समुदायों के बीच शत्रुता उत्पन्न करने) के तहत इमाम को डिफाल्ट बेल प्रदान की। कोर्ट ने जे.एन.यू. के इस छात्र को अन्य शर्तो सहित 30 हजार का निजी सुचलका और जमानत अदा करने पर राहत प्रदान की। शरजील ने आई.पी.सी. की धारा 436-ए के तहत जमानत मंजूर किए जाने के लिए आवेदन प्रस्तुत किया था। क्योंकि वह हिरासत अवधि में ही आधी से अधिक सजा प्राप्त कर चुके हैं। शरजील को सुप्रीम कोर्ट द्वारा गत 17 मई को पारित आदेश से भी मदद मिली। इस आदेश में सरकार को निर्देश दिए गए थे कि वह राजद्रोह के अपराध संबंधी सभी केसों को ठण्डे बस्ते में डाल दें।

चाहे प्रजातंत्रीय...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

थे इसमें कोई संदेह नहीं है।

थरूर तो अब सिर्फ इसलिए चुनाव मैदान में है ताकि लोकतंत्र के कट्टर समर्थक की अपनी छवि मजबूत कर सकें वे कांग्रेस के उच्चपद पर नई शुरुआत करना चाहते हैं। इससे यह भी साबित होगा कि गांधी परिवार के अलावा अन्य लोग भी औपचारिक प्रतिस्पर्धा से पार्टी अध्यक्ष बनने की इच्छा रखते है। कम से कम थरूर के आने से यह राग अलापना तो बंद होगा कि राहुल गांधी को पार्टी अध्यक्ष बनना चाहिए या सोनिया गांधी को औपचारिक रुप से अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होना चाहिए।

भविष्य के लिए यह उम्मीद की जा सकती है कि खड़गे जो एक जुझारु राजनेता हैं पार्टी की कार्यशैली में नई सोच ला पाएंगे। उभरते राजनैतिक हालात से निपटने के लिए कुछ नई रणनीतियों को मौका दिया जाना चाहिए।

अभी सबसे ज्यादा जरुरत है राज्य दर राज्य हार के चलन को रोका जाए और जिस तरह से राष्ट्रीय राजनीति में पार्टी हाशिए पर जा रही है, उसे भी रोका जाए। क्षेत्रीय स्तर पर नेताओं को कुछ अधिकार देने और पार्टी कार्यकर्ताओं को अधिकार देने से पार्टी को नया जीवन दिया जा सकता है। पार्टी में बैठे निहित स्वार्थी तत्वों और पुराने दिग्गजों से छुटकारा पाया जाए। पुराने नेताओं के जो मजबूत गढ़ है वे ही सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा रहे हैं। इसका नवीनतम और सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत हर कीमत पर सत्ता से चिपके रहने की प्रवृति के चलते उन्होंने बगावत करवाकर राजस्थान में स्थापित कांग्रेस सरकार तक को अस्थिर कर दिया।

इस पूरी प्रक्रिया में अगर किसी की हार हुई है तो वे है राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, उम्मीद है उन्हें जल्दी ही निकाल दिया जाएगा।

सितम्बर में 4 हजार से ज्यादा नए करोना संक्रमित मिले प्रदेश में

इससे पहले अगस्त के महीने में इनकी संख्या साढ़े 14 हजार से ज्यादा रही थी

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 30 सितम्बर। प्रदेश में सितम्बर के महीने में चार हजार से ज्यादा नए करोना संक्रमित सामने आए हैं।

वहीं इस बीच 14 लोगों की इस बीमारी से मौत भी हुई है। हालांकि शुक्रवार को 66 नए मरीज मिले हैं, जबकि 83 रोगी रिकवर हुए हैं। इसके साथ ही एक्टिव केस घटकर साढ़े चार सौ से भी कम हो गए हैं।

प्रदेश में सितम्बर के महीने में 4269 नए संक्रमित सामने आए हैं। इससे पहले अगस्त में इनकी संख्या 14 हजार 605 रही थी। सितम्बर में इस बीमारी से जहां केवल 14 ही रोगियों की मौत हुई है, वहीं, अगस्त में 47 लोगों की जान गई थी।

करोना संक्रमण में अगस्त के मुकाबले में सितम्बर में काफी कमी आई है।

- **राज्य में शुक्रवार को 66 नए संक्रमित सामने आए हैं।**
- **जयपुर में 13 और अजमेर में 12 नए मरीज पाए गए हैं।**

इधर राज्य में शुक्रवार को 16 जिलों में 66 नए संक्रमित मिले हैं। इससे पहले गुरूवार को 52 रोगी मिले थे। राजधानी जयपुर में आज सबसे ज्यादा 13 नए संक्रमित सामने आए हैं। इसके अलावा अजमेर में 12, अलवर में 10, कोटा में 9, जोधपुर में 4, सीकर में 3, बारां, बूंदी, दौसा, राजसमंद व उदयपुर में 2-2 तथा प्रतापगढ़, सिरोही, चितौड़गढ़, डूंगरपुर और जालोर में एक-एक नया संक्रमित मिला है। प्रदेश में इस बीच 10 हजार 674 जांचे हुई है।

प्रदेश में शुक्रवार को भी नए संक्रमितों से अधिक रिकवरी हुई है। इस दौरान 83 मरीजों के ठीक होने से एक्टिव केस घटकर 445 रह गए हैं। इनमें 93 मरीजों का इलाज जयपुर में चल रहा है। राज्य में शुक्रवार को भी करोना से किसी मरीज की मौत नहीं हुई है। हालांकि प्रदेश में अब तक इस बीमारी से 9641 लोगों की मौत हो चुकी है।

जयपुर में शनिवार को 10 स्थानों पर नए संक्रमित मिले हैं। इनमें सबसे ज्यादा 4 मरीज अजमेर रोड इलाके में पाए गए हैं। इसके अलावा वैशाली नगर में 2 तथा अजमेर, सी-स्कीम, कालवाड़, मानसरोवर, निर्माण नगर, राजापार्क और सांगानेर में 1-1 नया रोगी मिला है। इस बीच जिले में 15 मरीज ठीक भी हुए हैं।

- **केंद्रीय गृह मंत्री के दौरे से पहले सुरक्षा बलों द्वारा पहले से जारी अलर्ट और कड़ी सुरक्षा इंतजाम के कारण ऑपरेशन सफल रहा।**

कांग्रेस की दुविधा, शहर उन्मुख पार्टी बने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दिग्विजय सिंह और पृथ्वीराज चव्हाण पूर्व रक्षामंत्री ए.के.एन्टनी, पार्टी प्रवक्ता ए.एम.सिंघवी तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री अजय माकन।

थरूर ने भी अपरान्ह 3 बजे की समय सीमा से पहले ही, आज अपना नामांकन पत्र दाखिल कर दिया। झारखंड के पूर्व मंत्री के एन.त्रिपाठी जो इस चुनाव के तीसरे प्रत्याशी हैं, ने भी अपना पर्चा भर दिया है। दिग्विजय सिंह, जिन्होंने कल नामांकन पत्र लिया था, आज सुबह खड़गे से हुई मीटिंग के बाद, चुनाव परिदृश्य से हट गये।

सूत्रों ने कहा कि देर रात गये हुई मीटिंग के बाद, कांग्रेस नेता के.सी. वेणुगोपाल ने खड़गे को संदेश दिया कि नेतृत्व चाहता है कि वे चुनाव लड़ें, जबकि गांधी परिवार ने इस चुनाव में तटस्थ रहने की बात कही है।

सूत्रों ने कहा कि हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपिन्दर सिंह हूड़ा, जो उन असन्तुष्ट नेताओं ''जी-23'' ग्रुप के प्रमुख सदस्य हैं, जिन्होंने 2020 में सोनिया गांधी को धमाकेदार पत्र लिख कर संगठन में बदलाव की माँग की थी, ने पार्टी अध्यक्ष पद के लिये खड़गे का समर्थक किया हैं।

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, उनके प्रतिनिष्ठावान विधायकों के राजस्थान-विद्रोह के कल सोनिया गांधी से क्षमा-याचना करने के बाद, ने अध्यक्ष पद की दौड़ से स्वयं को अलग कर लिया था।

इस शीर्ष पद के लिये गहलोत उस समय तक गांधी परिवार की पसन्द थे, जब तक उनके प्रति निष्ठावान विधायकों द्वारा किये गये विद्रोह उनके प्रति यह असर खत्म कर दिया। गहलोत के प्रतिनिष्ठा रखने वाले विधायकों ने कहा था कि सचिन पायलट को स्वीकार नहीं करेंगे, जिन्होंने गहलोत के स्थान पर मुख्यमंत्री बनने के लिय, 2020 में उनके खिलाफ विद्रोह किया था।

कांग्रेस का कहना है कि सोनिया गांधी जल्दी ही यह निर्णय लेंगी कि गहलोत राजस्थान के मुख्यमंत्री पद पर बने रहेंगे या नहीं।

थरूर ने अध्यक्ष पद के लिए आज अपना नामांकन भरने के तुरंत बाद कहा कि कांग्रेस के भीतर ही उथल-पुथल का समाधान सत्ता का विकेन्द्रीकरण है। पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कांग्रेस प्रमुख के मद्देनजर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि ''मैं पार्टी हाई कमान की संस्कृति में बदलाव करूंगा।''

मुद्दों को लगातार दिल्ली रैफर करने की प्रथा को एक समस्या मानते हुए उन्होंने कहा कि पार्टी में कोई व्यक्ति एक वाक्य का यह प्रस्ताव पारित नहीं कर सकता कि अंतिम निर्णय कांग्रेस अध्यक्ष लेंगी।

पार्टी में आंतरिक चुनाव और स्थायी नेतृत्व की मांग को लेकर सोनिया गांधी को पत्र लिखने वाले असंतुष्ट गुट ''जी-23'' में थरूर ऐसे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने पार्टी के शीर्ष पद के लिए भाग्य आजमाने की कोशिश की है।

मल्लिकार्जुन खड़गे को गांधी परिवार का आधिकारिक एवं परिवार की सत्ता कामय रखने वाला प्रत्याशी बताते हुए थरूर ने कहा कि वे पार्टी में नया दृष्टिकोण लाएंगे। उन्होंने कहा कि ''मुझे इसे लेकर कोई आश्चर्य नहीं है कि पार्टी उन लोगों के पीछे लामबंद हो रही है जो यथा-स्थिति बनाए रखने का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि आप पार्टी में प्रगति और बदलाव चाहते हैं तो आपको मुझे वोट देना चाहिए।'' उन्होंने कहा कि उनकी योजना जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाने की है।

शशि थरूर ने स्पष्ट किया कि मल्लिकार्जुन खड़गे से उनका कोई दुर्भाव नहीं है। उन्हें कांग्रेस का ''भीष्म पितामह'' बताते हुए उन्होंने कहा कि ''हम प्रतिद्वंद्वी नहीं हैं। हम साथी हैं।''

उन्होंने कहा कि ''पार्टी किसी सर्वानुमत प्रत्याशी की तलाश में नहीं है। मैंने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा है और उनके समक्ष विकेन्द्रीकरण का विचार रखा है।''

शशि थरूर ने कहा कि ''वह गांधी परिवार के तीनों सदस्यों से मिल चुके हैं और उन्होंने उन्हें आश्वस्त किया है कि अध्यक्ष पद चुनाव पार्टी को मजबूत करेगा।''

अपने दृष्टिकोण की रूपरेखा बताते हुए उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य पार्टी को पुनर्जीवित करना, नेतृत्व की पुनर्कल्पना, पार्टी की मूल विचारधारा का पुन: प्रतिपादन करना, भागीदारी बढ़ाना, युवाओं पर फोकस और सामाजिक कार्य के राजनीतिक मूल्यों की वापसी करना है।

पंकज...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रिक्त चल रहा है। सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम की सिफारिश के बाद राष्ट्रपति नियुक्ति आदेश जारी करते हैं।

चौबीस घंटे मिले इस्तीफा देने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से नहीं ले रही है तथा सोच रही है कि उन्होंने गहलोत पर आखिर इतना विश्वास क्यों किया था।

गहलोत का आज्ञाकारी मीडिया अब इस प्रकार की खबरें गढ़ रहा है कि गहलोत पद पर बने रहेंगे, उन्होंने दिल्ली को साध लिया है, गहलोत और पायलट में समझौता हो गया है कि पायलट उनकी सरकार में शामिल हो जायेंगे तथा मन्त्री बन जायेंगे, पायलट पी.सी.सी. अध्यक्ष बना दिये जायेंगे। मन्त्रिमंडल का विस्तार होगा, आदि-आदि।

गहलोत इस पर अनाप-शनाप पैसा खर्च कर रहे हैं- उनका प्रयोजन बहुद्देशीय है। विधायकों को डराकर अपने पीछे खड़ा रखना, अपूर्ण कामों को निबटाना तथा इन प्रौजेक्टो से आने वाले शेष पैसे को उगाहना, नियुक्तियाँ करना, अपने पीछे आने वाले उत्तराधिकारी के लिये वित्तीय रूप से दिवालिया राज्य छोड़ जाना तथा अन्य विभिन्न प्रकार की समस्याएं एवं परेशानियाँ खड़ी कर जाना। गहलोत 24 घंटे के दिल्ली-प्रवास में बहुत सक्रिय रहे थे। दिल्ली से रवाना होने से ठीक पहले, अम्बिका सोनी ने उनसे जोधपुर हाउस में भेंट की थी। उन्होंने गहलोत से कहा बताते हैं कि वे (गहलोत) किसी प्रोजेक्ट के मामले में उनकी मदद करें जिसका सम्बन्ध 50 करोड़ रू के जमीन सौदे से है।

- **दिग्विजय सिंह ने अपना पर्चा वापस ले लिया, क्योंकि राहुल गांधी ने उनसे कहा था कि, अगर गहलोत पर्चा दाखिल करते हैं, तो वो भी उम्मीदवार बनें।**

इसके बदले में, अम्बिका सोनी ने उनसे वादा किया है कि वे सोनिया से उन्हें समय दिलाने की व्यवस्था करेंगी, जिससे वे (गहलोत) अपने मुख्यमंत्री बने रहने तथा विधायकों को सँभालने की व्यवस्था के लिये सोनिया गांधी को तैयार कर सके। यह सर्वविदित है कि अम्बिका सोनी तथा पवन बंसल बिजनेस-पार्टनर हैं। पिछली रात, गहलोत चुपचाप पवन बसंल से मिलने गये थे। उसके बाद, वे अपने लवाजमे को मनमोहन सिंह के निवास के सामने छोड़कर, मुकुल वासनिक से मिलने गये थे। इसके बाद, भूपिन्दर सिंह हूडा, मनीष तिवारी, आनन्द शर्मा तथा पृथ्वीराज चव्हाण के बीच एक मीटिंग हुई थी, जिसके बाद, आनन्द शर्मा अशोक गहलोत से मिलने गये थे तथा उनसे कहा था कि वे जी-23 के उम्मीदवार के रूप में, पार्टी अध्यक्ष पद के लिये अपना पर्चा भर दें। लेकिन गहलोत ने यह कहते हुये इनकार कर दिया था कि वे उस दिन सुबह दिये गये अपने सार्वजनिक बयान से पीछे नहीं हट सकते। समझा जाता है कि दिग्विजय सिंह ने अपना पर्चा इसलिये नहीं भरा था किं उनसे राहुल ने यह कहा था कि अगर गहलोत अपना पर्चा भरे, तो वे दिल्ली जाकर अपना नामांकन पत्र दाखिल कर दें। लेकिन चूँकि गहलोत ने पर्चा नहीं भरा, इसलिये सिंह ने भी स्वयं को चुनाव से हटा लिया।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908